दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार
प्लॉट सं.–5, झण्डेवालान, करोलबाग, नई दिल्ली–110005
दूरभाष : 011–23555676, 9990826519

विशेष अध्ययन वर्ग (वर्ष 2021–22)

दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा विभिन्न पाठ्यक्रम हेतु ऑनलाईन कक्षाएँ संचालित किया जाना प्रस्तावित है। इन पाठ्यक्रमों का अध्यापन ऑनलाईन माध्यम से किया जायेगा तथा प्रत्येक पाठ्यक्रम की अवधि 90 घण्टे की होगी। कक्षाएँ प्रायः छुट्टी के दिनों में शनिवार/रविवार को सांयकाल में आयोजित की जायेगी। इनका विवरण निम्नानुसार है :–

क्र.सं.	**पाठ्यक्रम/अध्ययन केन्द्र**	**क्र.सं.**	**पाठ्यक्रम/अध्ययन केन्द्र**
1	**संस्कृत भाषा अध्ययन** (Sanskrit Language Study)	5	**वास्तुशास्त्र अध्ययन** (Vastu-Sastra Study)
2	**आयुर्वेद अध्ययन** (Ayurveda Study)	6	**ज्योतिष अध्ययन** (Astrology Study)
3	**योग प्रशिक्षण** (Yoga Study)	7	**भारतीय प्रशासनिक सेवा संस्कृत शिक्षण केन्द्र** (Sanskrit Study Centre for I.A.S. Exam)
4	**कर्मकाण्ड अध्ययन** (Karmkand Study)		

अध्यापन के लिए इच्छुक विद्वान/विषय विशेषज्ञ अपना बायोडाटा अकादमी के ईमेल **studycenterdsa@gmail.com** पर प्रेषित कर सकते हैं। अध्यापन हेतु मानदेय अकादमी नीति के अनुसार दिया जायेगा। यदि कोई निःशुल्क अध्यापन हेतु इच्छुक हो तो उसका उल्लेख बायोडाटा में अवश्य करें। **बायोडाटा भेजने की अंतिम तिथि 10.08.2021 तक है।**

ह०/–
डॉ० अरुण कुमार झा
सचिव

उपरोक्त विषयों का पाठ्यक्रम निम्न प्रकार से है :–

संस्कृत भाषा पाठ्यक्रम

1. सोपानम्-प्रारम्भिक-अभ्यासः, लघुवाक्यानि, अभिवादन-वाक्यानि,परिचय-वाक्यानि
2. सोपानम्- व्यवहार-वाक्यानि
3. सोपानम्- व्यवहार-वाक्यानि, शुभकामना
4. सोपानम्- अव्यय-शब्दाः
5. सोपानम्- उत्तमपुरुषः एकवचनम्
6. सोपानम्- उत्तमपुरुषः द्विवचनम्
7. सोपानम्- उत्तमपुरुषः बहुवचनम्
8. सोपानम्- मध्यमपुरुषः एकवचनम्
9. सोपानम्- मध्यमपुरुषः द्विवचनम्
10. सोपानम्- मध्यमपुरुषः बहुवचनम्
11. सोपानम्- प्रथमपुरुषः पुँल्लिंग-एकवचनम्
12. सोपानम्- प्रथमपुरुषः पुँल्लिंग-द्विवचनम्
13. सोपानम्- प्रथमपुरुषः पुँल्लिंग-बहुवचनम्
14. सोपानम्- प्रथमपुरुषः स्त्रीलिंग-एकवचनम्
15. सोपानम्- प्रथमपुरुषः स्त्रीलिंग-द्विवचनम्
16. सोपानम्- प्रथमपुरुषः स्त्रीलिंग-बहुवचनम्
17. सोपानम्- अवबोधनम् शब्दरूपाणि उपसर्गाः च
18. सोपानम्- प्रथमा विभक्तिः, कर्त्ता, द्वितीया विभक्तिः, कर्म च
19. सोपानम्- तृतीया विभक्तिः करणकारकम्
20. सोपानम्- चतुर्थी विभक्तिः संप्रदानम्
21. सोपानम्- पंचमी विभक्तिः अपादानम्
22. सोपानम्- षष्ठी विभक्तिः सम्बन्धकारकम्
23. सोपानम्- सप्तमी विभक्तिः अधिकरणम्
24. सोपानम्- सम्बोधनम्
25. सोपानम्- कारक-विभक्ति-परियचः, प्रेरणार्थक-क्रिया,सर्वनाम-शब्दाः, विशेष्य-विशेषण-शब्दाः च
26. सोपानम्- उपपदविभक्तयः
27. सोपानम्- सन्धि-परिचय
28. सोपानम्-'तुमुन्' 'क्त्वा' 'ल्यप्' प्रत्यानां प्रयोगः
29. सोपानम्- क्त-क्तवतु-शतृ-शानच्-प्रत्यय-प्रयोगः
30. सोपानम्- संख्या : गणना
31. परिशिष्टम्- गीतानि-प्रभु-स्तुतिः, पठन्तु संस्कृतं जनाः, लोकहितं मम करणीयम्, सुरससुबोधा विश्वमनोज्ञा, वसुधैव कुटुम्बकमस्ति सखे।, सुभषितानि-1, सुभषितानि-2, सुन्दरसुरभाषा
32. उपयोगि- शब्दानाम् अभ्यासः
33. वार्तालापस्य अभ्यासः
34. संस्कृते सम्भाषणस्य अभ्यासः

आयुर्वेद पाठ्यक्रम

1. आयुर्वेद परिभाषा, स्वास्थ्य परिभाषा, आयुर्वेदावतरण पंच महाभूत, त्रिदोष, सप्तधातु, त्रिमल, आयुर्वेद लक्ष्य
2. दिनचर्या, ऋतुचर्या, सद्वृत्त
3. त्रय उपस्तम्भ-आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य
4. आत्मा, मन-शारीरिक एवं मानसिक व्याधि रोगों का कारण
5. अधारणीय वेग, धारणीय वेग
6. प्रकृति परीक्षा, नाड़ी परीक्षा
7. रोग चिकित्सा, अग्नि (जाठराग्नि), स्रोतस, आम
8. प्रज्ञापराध, जनपदोध्वंय, उपचार एवं प्रतीकार
9. योग (अष्टांग योग), प्रणायाम, व्यायाम
10. रसायन, बाजीकरण, शिशु संसकार
11. पंचकर्म
12. घरेलू उपचार, औषधियाँ (रसपंचक)
13. लाइफ स्टाइल, मधुमेह, उक्त रक्तचाप, कैंसर
14. आमवात, सन्धिवात, वातरक्त, अववाहुक
15. अम्लपित्त, आनाह, रक्तपित्त, कुष्ठ, श्वास, ग्रहणी
16. प्रवेशार्थियों से प्रश्नोत्तर

योग पाठ्यक्रम

1. योग का इतिहास और विकास, अर्थ और परिभाषाएं, भ्रामक धारणाएं, योग का लक्ष्य एवं उद्देश्य।
2. ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग, राजयोग, हठयोग एवं मंत्र योग का परिचय।
3. पंतजलि योगसूत्र–समाधिपाद, साधनपाद, विभूतिपाद, कैवल्य पाद।
4. हठयोग के ग्रन्थ–हठयोग और हठयोग के ग्रन्थों का परिचय–योग बीज, गौरक्ष संहिता, शिवसंहिता, वशिष्ठ संहिता, सिद्धसिद्धांत पद्धति, हठप्रदीपिका, घेरण्डसंहिता और हठरत्नावली। हठयोग का उद्देश्य, हठयोग से सम्बन्धित भ्रामक धारणाएं।
5. हठयोग के ग्रन्थों में आसन–योगासन की परिभाषा, पूर्वापेक्षाएं और प्रमुख विशेषताएँ, हठप्रदीपिका, हठरत्नावली, शिवसंहिता, वशिष्ठसंहिता, घेरण्डसंहिता में वर्णित आसनों के लाभ, सावधानियाँ और प्रतिकूलात्मक निर्देश।
6. क्रियात्मक योग
    1. यौगिक अभ्यास–आसन, प्राणायाम, मुद्रा, बन्ध, ध्यान, सूर्यनमस्कार (विधियां एवं लाभ)।
    2. षट्क्रम–वमनधौति, वस्त्र धौति, दण्ड धौति, लघु एवं पूर्ण शंख प्रक्षालन, नेति (सूत्र एवं जल) कपालभाति, अग्निसार, नौलि, त्राटक।
    3. सूर्यनमस्कार–परम्परा आधारित सूर्यनमस्कार।
    4. आसन–खड़े होकर करने वाले आसन, अर्द्धकटिचक्रासन्, पादहस्तासन्, अर्धचक्रासन, त्रिकोणासन, परिवृत्त त्रिकोणासन, पार्श्वकोणासन, वीरासन्।
    5. बैठकर किये जाने वाले आसन–पश्चिमोत्तानासन्, सुप्तवज्रासन, अर्धमत्स्येन्द्रासन, वक्रासन्, बद्धकोणासन्, मेरुदण्डासन्, आकर्णधनुरासन्, गोमुखासन्।
    6. पेट के बल लेटकर किये जाने वाले आसन–भुजंगासन्, शलभासन्, धनुरासन्, वानासन्, मकरासन्।
    7. पीठ के बल लेट कर किये जाने वाले आसन– हलासन, चक्रासन्, स्वर्गासन्, मत्स्यासन्
    8. संतुलन कारक आसन– वृक्षासन, गरुड़ासन, नमस्कारासन्, नटराजासन्।
    9. प्रणायाम–श्वास के प्रति जागरूकता, विभिन्न प्रकार की श्वसन क्रिया, नाड़ी, शुद्धि, सूर्यभेदन, उज्जायाी, शीतली, सीत्कारी, भस्त्रिका, भ्रामरी, बाह्यवृत्ति, आभ्यन्तरवृत्ति, स्तम्भवृत्ति प्राणायाम।
    10. ध्यानस्थ होने के यौगिक अभ्यास– प्रणव एवं सोऽहम् जप, योग निद्रा अन्तर्मौन, अजपा, जप, स्वसनआधारित ध्यानस्थ होने के अभ्यास, ओम ध्यान के यौगिक अभ्यास।

ज्योतिष पाठ्यक्रम

कः सामान्य ज्योतिष–ज्योतिष क्याहै?

खः ज्योतिष से संबंधित खगोल विज्ञान

1. सायन तथा निरयन भचक्र
2. नक्षत्र
3. वैदिक ज्योतिष में ग्रह
4. राहु व केतु
5. पंचांग
6. ग्रहण

गः गणित ज्योतिष

1. जन्म पत्रिका बनाना
2. दशा–अंतर्दशा गणना
3. १२ भाव
4. षोडश संस्कार (विशेषकर नवांश)

घः फलित ज्योतिष

1. ग्रहों की प्रकृति एवं दृष्टियां
2. राशियों की प्रकृति
3. राशि स्वामी एवं ग्रहों के कारकत्व
4. लग्न कामहत्व
5. प्रत्येक लग्न के लिए शुभा शुभग्रह
6. योग कारक ग्रह
7. ज्योतिषीय योग (संक्षेप में)

ङः कुण्डली क्या कहती है?

1. भाव, भावेश एवं भावकारक
2. दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर दशा
3. चन्द्रमा से गोचर

चः योगिनी

छः मन्त्रोपचार चिकित्सा

जः ग्रह का अस्त और वक्री होने का निर्धारण

झः आयुशोधन/मारकेश निर्धारण

ञः अभ्यास

1. २० अलग–अलग क्षेत्रों के व्यक्तियों की कुण्डली का विश्लेषण।
2. जीवन की प्रमुख समस्याओं का निर्धारण।

वास्तुशास्त्र पाठ्यक्रम

इकाई – 1

- वास्तुशास्त्र का परिचय
- शास्त्र की दृष्टि में वास्तुशास्त्र
- पंचमहाभूत एवं प्राकृतिक शक्तियों का महत्व एवं उपयोगिता

इकाई – 2

- ज्योतिष एवं वास्तु
- दिग् देश एवं काल
- वास्तुशास्त्र का क्षेत्र एवं लक्ष्य
- वास्तु के विविध भेद

इकाई – 3

- भूमि के गुण एवं दोष
- प्रशस्त भूमि
- भू–परिक्षण की विधियां

इकाई – 4

- विविध प्रकार के भूखण्ड
- भूखण्ड के विभिन्न आकार
- भूखण्ड के समीपवर्ती मार्ग एवं वेध विचार

इकाई – 5

- भूखण्डों की विभिन्न श्रेणियां
- शल्योद्धार प्रक्रिया
- गृहारम्भ मुहुर्त्त विचार

इकाई – 6

- वास्तुशास्त्र में षोडष कक्षों का महत्व
- वर्तमान सन्दर्भ में वास्तुशास्त्र के अनुसार कक्षों का विन्यास
- व्यावसायिक एवं धार्मिक वास्तु का परिचय

इकाई – 7

- गृहप्रवेश मुहुर्त्त एवं प्रक्रिया
- वास्तुशान्ति प्रकरण

कर्मकाण्ड अध्ययन का पाठ्यक्रम बाद में निर्धारण किया जायेगा।

भारतीय प्रशासनिक पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र प्रथम

1. संज्ञा, संधि, कारक, समास, कर्तृ/कर्मवाच्य (वाच्य प्रयोग) पर विषेश बल देते हुए व्याकरण की प्रमुख विषेशताएँ
2. (क) वैदिक संस्कृत भाषा की मुख्य विषेशताएँ, (ख) शास्त्रीय संस्कृत भाषा के प्रमुख लक्षण
   (ग) भाषा वैज्ञानिक अध्ययन में संस्कृत का योगदान
3. **सामान्य ज्ञान**
   (क) संस्कृत का साहित्यक इतिहास, (ख) साहित्यक आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
   (ग) रामायण (घ) महाभारत,
   (ड) साहित्य विधाओं का उद्भव और विकास
   महाकाव्य, रुपक (नाटक), कथा, आख्यायिका, चम्पू, खंडकाव्य, मुक्तकाव्य
4. **भारतीय संस्कृति का सार निम्नलिखित का बल देते हुए**
   (क) पुरुषार्थ (ख) संस्कार (ग) वर्णाश्रमव्यवस्था (घ) कला और ललित कला
   (ड) तकनीकी विज्ञान
5. **भारतीय दर्शन की प्रवृत्तियाँ**
   (क) मीमांसा (ख) वेदांत (ग) न्याय (घ) वैशेषिक
   (ड) सांख्या (च) योग (छ) बुद्ध (ज) जैन
   (झ) चर्वाक
6. (क) संस्कृत में संक्षिप्त निबंध
   (ख) अनदेखा पाठांश और प्रश्न इसका उत्तर संस्कृत में देना होगा।

प्रश्न पत्र द्वितीय "खण्ड क"

1. **निम्नलिखित समुच्चयों का अध्ययन**
   (क) रघुवंशम् –कालिदास
   (ख) कुमारसंभवम् –कालिदास
   (ग) किरातार्जुनीसयम् –भारवि
   (घ) शिशुपालवधम् –माघ
   (ड़) नैषध चरितम् –श्रीहर्ष
   (च) कादम्बरी–बाणभट्ट
   (छ) दशकुमारचरितम् –दंडी
   (ज) शिवराज्योद्‌यम् – एस.बी.वारनेकर
2. (क) ईशवास्योपनिषद्
   (ख) भगवद्‌गीता
   (ग) बाल्मीकिरामायण का सुंदरकांड
   (घ) कौटिल्य का अर्थशास्त्र
3. (क) स्वप्नवासवदत्तम्– भास
   (ख) अभिज्ञान शाकुन्तलम् – कालिदास
   (ग) मृच्छकटिकम् – शूद्रक
   (घ) मुद्राराक्षसम् – विशाखदत्त
   (ड) उत्तररामचरितम् – भवभूति
   (च) रत्नावली – श्रीहर्षवर्धन
   (छ) वेणीसंहारम् – भट्टनारायण
4. निम्नलिखित पर संस्कृत में संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखें –
   (क) मेघदूतम् – कालिदास
   (ख) नीतिशतकम् – भर्तृहरि
   (ग) पंचतत्र
   (घ) राजतरंगिणी – कल्हण
   (ड) हर्षचरितम् – बाणभट्ट
   (च) अमरूकशतकम् – अमरूक
   (छ) गीतगोविंदम् – जयदेव

प्रश्न पत्र द्वितीय "खण्ड ख"

1. निम्नलिखित समुच्चयों का अध्ययन
   (क) रघुवंशम् –सर्ग 1 (श्लोक 1 से 10)
   (ख) कुमारसंभवम् सर्ग 1 (श्लोक 1 से 10)
   (ग) किरातार्जुनीसयम् सर्ग 1 (श्लोक 1 से 10)

2. (क) ईशवास्योपनिषद् (श्लोक 1,2,4,6,7,15 एवं 18)
   (ख) भगवत्‌गीता, द्वितीय अध्याय (श्लोक 13 से 25)
   (ग) बाल्मीकि का सुंदरकांड– सर्ग 15
   (श्लोक 15 से 30 गीताप्रेस संस्करण)
3. (क) मेघदूतम् (श्लोक 1 से 10)
   (ख) नीतिशतकम्, द्वितीय अध्याय (श्लोक 1 से 10)
   (भारतीय विद्याभवन पब्लिकेशन, संस्करण डी.डी. कौशाम्बी)
   (ग) कादम्बरी – सुकन्नासोपदेसा
4. (क) स्वप्नवासवदत्तम् (नाटक का अंक 6)
   (ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (नाटक का अंक 4, श्लोक 15 से 30)
   (ग) उत्तररामचरितम् (नाटक का अंक १, श्लोक ३१ से ४७) (एम.आर. काले संस्करण)

इन पाठ्यक्रमों में अकादमी यथासमय संशोधन कर सकती है।